❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

स्वामी श्रद्धानन्द जी के 92वें बलिदान दिवस के अवसर पर

विशाल शोभायात्रा एवं सार्वजनिक सभा

25 दिसम्बर, 2018 : रामलीला मैदान, नई दिल्ली

आर्यजन अधिकाधिक संत्रया में पहुंचकर संगठनशक्ति का परिचय दें

वर्ष 42, अंक 2 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 26 नवम्बर, 2018 से रविवार 2 दिसम्बर, 2018
विक्रमी सम्वत् 2075 सृष्टि सम्वत् 1960853119
दयानन्दाब्द : 195 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का त्रैवार्षिक साधारण सभा अधिवेशन सम्पन्न

श्री धर्मपाल आर्य पुनः सर्वसम्मति से प्रधान निर्वाचित

हरियाणा सभा के प्रधान मा. रामपाल एवं श्री सत्यानन्द आर्य जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ निर्वाचन

सम्पूर्ण दिल्ली से सैंकड़ों की संख्या में पधारे आर्य प्रतिनिधियों ने हाथ उठाकर किया पूर्ण समर्थन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का त्रैवार्षिक साधारण अधिवेशन रविवार 25 नवम्बर 2018 को आर्य समाज हनुमान रोड, नई दिल्ली के सभागार में सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी की अध्यक्षता में बड़े सौहार्द एवं शान्तिप्रिय वातावरण में सम्पन्न हुआ। निर्वाचन अधिकारी के रूप में आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान मा. रामपाल जी उपस्थित थे। दिल्ली की आर्य समाजों के सैंकड़ों प्रतिनिधियों की उपस्थिति में पूर्ण सफल ही नहीं अपितु सभा के नव निर्वाचित अधिकारियों को सभा के आगामी कार्यों को क्रियांवित करने में तन-मन-धन से पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन भी दिया गया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा विगत वर्षों में किये गये विभिन्न कार्यक्रमों, अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-2018 एवं प्रकल्पों, कार्य योजनाओं का जिक्र करते हुए महामंत्री श्री विनय आर्य ने अधिवेशन के अवसर पर प्रकाशित त्रैवार्षिक वृत्तान्त 2014-15-16-17-2018 पुस्तक में प्रकाशित वृत्तान्तों के कुछ सारगर्भित अंश आर्य प्रतिनिधियों को पढ़कर सुनाए गये।

रविवार 25 नवम्बर को सम्पन्न हुए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के त्रैवार्षिक अधिवेशन एवं निर्वाचन में सर्वसम्मति से श्री धर्मपाल आर्य जी को पुनः प्रधान चुने जाने बधाई देते निर्वाचन अधिकारी मा. रामपाल जी, विनय आर्य जी, विद्यामित्र ठुकराल जी, जोगेन्द्र खट्टर जी, डॉ. मुकेश जी एवं अन्य आर्यजन। अधिवेशन में हाथ उठाकर श्री धर्मपाल आर्य जी के नाम का समर्थन एवं अनुमोदन करते दिल्ली की विभिन्न आर्यसमाजों से पधारे प्रतिनिधि।

– *शेष पृष्ठ 7-8 पर*

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली : 25-28 अक्तूबर, 2018

स्वामी दयानन्द सरस्वती सामाजिक और आध्यात्मिक सुधार के निर्भीक योद्धा थे

उद्घाटन समारोह के अवसर पर भारत के राष्ट्रपति माननीय श्री राम नाथ कोविन्द जी का उद्बोधन

यहां उपस्थित आप सभी लोगों में आर्य समाज के आदर्शों और **महर्षि दयानन्द सरस्वती** के प्रति श्रद्धा और उत्साह का भाव देखकर मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है। मुझे यह जानकर खुशी हुई है कि इस अंतर्राष्ट्रीय आर्य सम्मेलन में भाग लेने के लिए 32 देशों से प्रतिनिधि पधारे हैं। आप लोगों की ऊर्जा और आर्य समाज की सक्रियता को देखकर मुझे **श्री अरविंद घोष** का एक कथन याद आता है। उन्होंने स्वामी दयानंद जी के बारे में कहा था कि 'वे मनुष्यों और संस्थाओं के मूर्तिकार हैं'। उनकी क्षमता को देखते हुए **ईश्वर चन्द्र विद्यासागर** और **केशव चन्द्र सेन** सरीखे समाज सुधारकों ने भी यह चाहा कि स्वामी जी को जनता के साथ संवाद करना चाहिए और उनका उद्धार करना चाहिए। आगे चलकर **स्वामी दयानंद सरस्वती** की प्रेरणा से **आत्मानन्द सरस्वती, लाला हंसराज, पंडित गुरुदत्त, स्वामी श्रद्धानंद** और **लाला लाजपत राय** जैसे परोपकारी महापुरुषों ने आर्य समाज के प्रकल्पों को आगे बढ़ाया। सचमुच ही स्वामी दयानंद जी के आदर्शों की प्रेरणा से करोड़ों मनुष्यों के चरित्र का निर्माण हुआ है। मैं आप सबके साथ उनके सम्मान में नमन करता हूँ।

यहाँ जो मंत्र हमने सुने उनका संदेश हमारी बुद्धि और चेतना को सब प्रकार से शुद्ध करने का है। ये मंत्र धर्म और संप्रदाय से ऊपर उठकर, पूरी मानवता को प्रकाशित करने के लिए आवाहन हैं।

जैसा कि सभी जानते हैं उन्नीसवीं सदी में एक ऐसा दौर आया था जब पश्चिमी साम्राज्यवाद अपनी बुलंदी पर था और भारत के लोग अपनी संस्कृति और मान्यताओं को कमजोर समझ रहे थे। अंध-विश्वासों और कुरीतियों ने समाज को जकड़ रखा था। ऐसे समय में स्वामी दयानंद सरस्वती ने पुनर्जागरण और आत्म-गौरव का संचार किया। वे सामाजिक और आध्यात्मिक सुधार के निर्भीक योद्धा थे। उन्होंने शिक्षा, समाज सुधार विशेषकर अस्पृश्यता-निवारण और महिला सशक्तीकरण के ऐसे प्रभावी कदम उठाए जो आज तक भारतीय समाज के लिए और पूरे विश्व के लिए प्रासंगिक हैं। उन्होंने हमारी आस्थाओं को शक्ति प्रदान करने के साथ-साथ आचार-विचार से जुड़ी पद्धतियों को तर्क की कसौटी पर रखने का उपदेश दिया, और समाज को कुरीतियों और आडंबरों से मुक्त कराया। आस्था और आधुनिकता का यह समन्वय स्वामी जी की अनमोल देन है।

स्वामी दयानंद की सबसे लोकप्रिय और महत्वपूर्ण पुस्तक 'सत्यार्थ प्रकाश' का पहला संस्करण सन् 1875 में प्रकाशित हुआ था। इसी वर्ष मुंबई में उन्होंने आर्य समाज की स्थापना की। यह तथ्य उल्लेखनीय है कि 'सत्यार्थ प्रकाश' में

– *शेष पृष्ठ 3 पर*

वेद-स्वाध्याय

आत्मिक शक्तियों द्वारा अतिदीर्घ आयु

प्रजापतेरावृतो ब्रह्मणा वर्मणाहं कश्यपस्य ज्योतिषा वर्चसा च।
जरदष्टि कृतवीर्यो विहायाः सहस्रायुः सुकृतश्चरेयम्।। अथर्व 17/1/27
ऋषि : **ब्रह्मा।।** देवता - **आदित्यः।।** छन्दः **जगती।।**

शब्दार्थ- प्रजापतेः = प्रजापालक 'ईश्वर' के **ब्रह्मणा** = महान् ज्ञानरूपी 'प्राज्ञतारूपी' **वर्मणा** = कवच से **आवृतः** = ढका हुआ और **कश्यपस्य** = महासूर्य 'हिरण्यगर्भ' के **ज्योतिषा** = प्रकाश से **वर्चसा** = तथा तेज से ढका हुआ मैं **जरदष्टिः** = बड़ी वृद्धावस्था में भी सब कर्म-सामर्थ्य रखनेवाला **कृतवीर्यः** = सब प्रकार के वीर्य को सञ्चित किये हुए **विहायाः** = विविध गमन की सिद्धि रखने वाला **सहस्रायुः** = हज़ार वर्ष की उम्रवाला होकर **सुकृतः** = सुकृत कर्म करता हुआ **चरेयम्** = विचरता रहूं, जीवित रहूं।

विनय- हे प्रभो! मेरी महत्त्वाकांक्षा यह है कि मैं पुण्यकर्म करता हुआ हज़ार वर्ष तक जीवन धारण करूं। ऐसा दिव्य जीवन बितानेवाले सिद्ध पुरुष संसार में हुआ करते हैं। मैं वैसा ही विभूति-सम्पन्न होना चाहता हूँ। मेरी अमर आत्मा अपने अमरत्व को लगभग स्थूल शरीर तक पहुंचा देगी। सर्वसाधारण लोगों के आत्मा और मन का तो शरीर पर प्रभाव नहीं होता, किन्तु उनके शरीर का मन-आत्मा पर प्रभाव होता है। इसीलिए वे स्थूल भौतिक संसार के वृद्धि-क्षय आदि नियमों के वशीभूत होते हैं और उन्हें इतनी जल्दी-जल्दी चोले बदलने पड़ते हैं, परन्तु मैं अपने-आपको ऐसे दिव्य कवचों से सुरक्षित करूंगा कि मेरे आत्मा का ही प्रभाव बेरोक-टोक स्थूल-शरीर और स्थूल-जगत् तक पड़ेगा। मैं अपने आत्मा को, कारण शरीर को, 'प्रजापति के ब्रह्म' से, ईश्वर की प्राज्ञावस्था के कवच से ढक लूंगा और अपने बुद्धि-मन आदि सूक्ष्म शरीर को 'कश्यप' की, हिरण्यगर्भ की ज्योति से ढक लूंगा तथा अपने प्राणशरीर को उसके वर्चस् से, प्राणमय तेज से ढक लूंगा। एवं, मुझमें पूरा आत्मिक वीर्य तथा मानसिक व शारीरिक वीर्य भी सञ्चित, रक्षित रहेगा, अतः मैं इतनी लम्बी जीर्णता की अवस्था तक भी सर्वथा समर्थ रहूंगा। मुझमें सर्वत्र गमन कर सकने की सिद्धियां प्राप्त होंगी और मैं हज़ार1 वर्ष तक जीता हुआ सर्वकल्याण के सुकृत कर्म करता रहूंगा। हे जगदीश्वर! मेरी इस महत्त्वाकांक्षा का पूर्ण करो।

1. मनुष्य की पूर्ण आयु चार सौ वर्ष है। सहस्र का एक अर्थ 'वह' बहुत भी है, अतः यहां मैं दीर्घजीवी बनूं, बहुत वर्षों तक जीऊं, इतना ही तात्पर्य है।

-: साभार :- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

चर्च के खिलाफ क्यों हुए आदिवासी?

...एक समय आदिवासियों की स्थिति बेहद दयनीय थी। दाने-दाने को लोग मोहताज थे, गरीबी और बीमारी से जूझ रहे थे। कुपोषण की समस्या भी चरम पर थी और अशिक्षित तो थे ही, इसका ही फायदा ईसाई मिशनरियों ने खूब उठाया किन्तु मिशनरियों के काम-काज देखकर शायद अब आदिवासियों को यह अहसास होने लगा है कि उनकी जमीन भी जा रही है और उनकी आदिकालीन संस्कृति भी खतरे में है। इस कारण वह समझ रहे हैं कि सेवा की आड़ में और प्रलोभन देकर आदिवासियों का धर्मांतरण कराया जा रहा है ....

भारत की महान धार्मिक एवं सामाजिक मान्यतायें जिनसे प्रेरणा प्राप्त कर सम्पूर्ण विश्व में धार्मिक एवं सांस्कृतिक परम्पराओं का निर्माण हुआ है, किन्तु अब उन्हें चकनाचूर करने का कार्य पिछले कई सौ वर्षों से झारखंड, छत्तीसगढ़ समेत भारत के कई राज्यों में अनवरत चर्च द्वारा किया जा रहा है। यह एक ऐसा सच है जिसे देखकर वर्षों से हमारे राजनेता और मीडिया मौन धारण किये हुए हैं। हो सकता है इनकी कोई मजबूरी रही हो किन्तु जनता जनार्दन की कोई मजबूरी नहीं होती उनकी भावनाओं का सैलाब जब उमड़ता है तो नेताओं और मीडिया की क्या बिसात, सत्ता और सिंहासन तक बह जाते हैं।

बताया जा रहा है कि हाल ही में एक ऐसा ही धार्मिक भावनाओं का सैलाब झारखंड की राजधानी रांची से करीब 25 किलोमीटर दूर आदिवासी बहुल गांव गढ़खटंगा में देखने को मिला। इस गांव के लोगों ने आदिवासियों की जमीन पर बने चर्च के ऊपर लगे क्रॉस को तोड़कर अपना पारम्परिक सरना झंडा लगा दिया है। यानि वहां से चर्च को समाप्त कर दिया है। गाँव वालों का दावा है कि गलत तरीके से गाँव की जमीन को हथियाकर वहां पर विश्ववाणी नाम से चर्च बनवा दिया गया था। चर्च के खिलाफ आदिवासियों के गुस्से से यही समझा जा सकता है कि काफी समय से सरना आदिवासी और इनके संगठन झारखंड में ईसाइयों के धर्म प्रचारकों तथा चर्च की गतिविधियों को लेकर क्यों उबाल पर हैं।

वैसे देखा जाये तो पिछले काफी अरसे से चर्च विश्व भर में चर्चा का विषय बने हुए हैं और यदि इस विषय को भारत के संदर्भ में देखें तो अलग-अलग प्रान्तों में चर्च अलग-अलग आरोप झेल रहे हैं। केरल में चर्च यौन उत्पीड़न के कुछ विवादों में रहे हैं यानि कुछ पादरियों पर महिलाओं के यौन उत्पीड़न के आरोप लगे हैं। दिल्ली और गुजरात के चर्च भाजपा जैसे कथित हिंदूवादी दलों से सभी को सावधान रहने के लिए सभी गिरजाघरों को पत्र लिख रहे हैं तो पूर्वी-उत्तर प्रदेश और मध्य भारतीय राज्यों एवं बंगाल, उड़ीसा समेत अन्य कई राज्यों में कथित धर्मांतरण के आरोप से भी चर्चों और पादरियों के दामन साफ नहीं हैं। किन्तु झारखंड में चर्च से आदिवासी समुदाय सीधा टकराता दिख रहा है। यहाँ सिर्फ आरोप नहीं बल्कि आदिवासी समुदाय द्वारा प्रतिक्रियाएं भी देखने को मिल रही हैं। आदिवासी समुदाय सरना लोग का गिरजाघरों के खिलाफ जगह-जगह बैठक कर धरनों का सिलसिला भी तेज हुआ है। सड़कों पर जुलूस भी निकाले जाते रहे हैं।

यह टकराव नया नहीं है, आदिवासियों और ईसाई मिशनरियों में सांस्कृतिक और धार्मिक टकराव साल 2013 में उस समय भी देखने को मिला था जब रांची के सिंहपुर गांव के कैथलिक चर्च में मदर मेरी की ऐसी मूर्ति का अनावरण किया था जिसमें मदर को आदिवासी महिलाओं के पारंपरिक और सांस्कृतिक परिधान, लाल किनारे वाली सफेद साड़ी में दिखाया गया था। तब भी विरोध में रांची के मोराबादी मैदान में करीब 20,000 आदिवासियों ने जमा होकर विरोध किया था। मूर्ति में मदर मेरी ने जिस तरीके से बालक यीशु को पीले कपड़े से बांधकर गोद में ले रखा था, वह भी बिल्कुल वैसा ही था जैसे आदिवासी महिलाएं अपने बच्चों को रखती हैं।

हालाँकि अब झारखंड सरकार ने राज्य में धर्म परिवर्तन पर पहरा लगा दिया है। लालच देकर या जबरन धर्म परिवर्तन कराने के मामले में, कानून बनाकर चार साल जेल की सजा के अलावा जुर्माने का भी प्रावधान है। इसे गैर जमानतीय अपराध माना गया है। इसमें ये भी कहा गया है कि अगर अनुसूचित जाति और जनजाति के किसी व्यक्ति का धर्मान्तरण कराया जाता है, तो ऐसे में चार साल की सजा और एक लाख रुपए तक का जुर्माना हो सकता है। अगर कोई व्यक्ति स्वेच्छा से धर्म परिवर्तन करना चाहता है, तो उसे सम्बन्धित जिले के उपायुक्त से अनुमति लेनी होगी।

एक समय आदिवासियों की स्थिति बेहद दयनीय थी। दाने-दाने को लोग मोहताज थे, गरीबी और बीमारी से जूझ रहे थे। कुपोषण की समस्या भी चरम पर थी और अशिक्षित तो थे ही, इसका ही फायदा ईसाई मिशनरियों ने खूब उठाया किन्तु मिशनरियों के काम-काज देखकर शायद अब आदिवासियों को यह अहसास होने लगा है कि उनकी जमीन भी जा रही है और उनकी आदिकालीन संस्कृति भी खतरे में है। इस कारण वह समझ रहे हैं कि सेवा की आड़ में और प्रलोभन देकर आदिवासियों का धर्मांतरण कराया जा रहा है तभी तो पिछले दिनों दुमका के सुदूर गांव में आदिवासियों ने ईसाई धर्म के कथित प्रचारकों को घेर लिया था, जिन्हें बाद में पुलिस ने गिरफ्तार कर जेल भेज दिया था। थोड़े समय पहले ही चाईबासा के एक सुदूर गांव में कई आदिवासी जो ईसाई बन गए थे उन्हें फिर से आदिवासी समाज में लाया गया था।

सरना परम्परा आदिवासियों के जीने की पद्धति है जिसमें लोक व्यवहार के साथ पारलौकिक आध्यमिकता और अध्यात्म जुड़ा हुआ है। आत्मा और परमात्मा की आराधना उनके लोक जीवन और सामाजिक जीवन का एक भाग है, सरना आदिवासी प्रकृति का पूजन करता है वह पेड़, खेत, खलिहान सहित सम्पूर्ण प्राकृतिक प्रतीकों की पूजन करता है। यहाँ तक वह पेड़ काटने के पूर्व पेड़ से क्षमा याचना करता है। कुल मिलाकर यही कहा जा सकता है कि सरना आदिवासी निराकार ईश्वर को वेदों के अनुसार एक अमूर्त शक्ति के रूप में मानता है और ईसाई मिशनरियां वेटिकन के आदेश पर अपने धर्म पोथे थोपने को आतुर हैं। इसी वजह से चर्च आदिवासियों के रीति-रिवाज और संस्कृति पर चोट पहुंचा रहे हैं। जिससे आदिवासी उबाल खा रहे हैं इस कारण कहना गुनाह नहीं होगा कि चर्च झारखंड को एक किस्म से अशांति की ओर भी धकेल रहे हैं।

-सम्पादक

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

खेद व्यक्त

सभी पाठकों के समक्ष खेद व्यक्त किया जाता है कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के त्रैवार्षिक साधारण अधिवेशन एवं निर्वाचन की तैयारियों के चलते आर्यसन्देश साप्ताहिक का गत अंक 19 नवम्बर से 25 नवम्बर प्रकाशित नहीं हो सका, इसके लिए सम्पादक मंडल खेद व्यक्त करता है। - *सम्पादक*

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन
25-28 अक्तूबर, 2018 दिल्ली

मेरा रोम-रोम आर्यसमाज के लिए समर्पित

महासम्मेलन के स्वागताध्यक्ष महाशय धर्मपाल जी का आशीर्वाद

परमपिता परमात्मा के आशीर्वाद एवं अनुकंपा से आरंभ होने जा रहे आर्य समाज के इस विशाल अतंर्राष्ट्रीय आर्य महा सम्मेलन के अवसर पर विश्व भर से पधारे हुए आर्यजनों का इस महासम्मेलन के स्वागताध्यक्ष होने के नाते आप सबका हार्दिक अभिनन्दन करता हूं।

महान वेदज्ञ, परम ईश्वर विश्वासी महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने आर्य समाज की स्थापना मानव कल्याणार्थ की थी, उनके कार्यों को आगे चलाए रखने की जिम्मेदारी उन्होंने समस्त आर्यजनों को दी थी और हमारा सौभाग्य है कि हमारे पूर्वजों ने उस जिम्मेदारी को बेहतरी से निभाया है, तभी तो आज आर्यसमाज भारत एवं विश्व के अनेक देशों में फैला हुआ है और निरन्तर गतिशील संगठन रहते हुए आर्य समाज का प्रत्येक क्षेत्र में तथा प्रत्येक कार्य में विस्तार हुआ है तथा हो रहा है।

आज समस्त विश्व के आर्यजनों की यह सोचने की जिम्मेदारी बन जाती है कि हम सम्मिलित रूप से महर्षि दयानंद के सपनों को पूरा करने के लिए क्या कर पा रहे हैं और अभी हम कहां तक पहुंच पाए हैं? इन्हीं सब बातों पर समस्त विश्व के आर्यजन एक साथ बैठकर विचार कर सकें, इसी उद्देश्य से सन् 1927 से आर्य महासम्मेलनों की परम्परा का आरंभ हुआ और हम समस्त विश्व के अलग-अलग स्थानों में विशाल सम्मेलन आयोजित करके आज पुन: यहां दिल्ली में एकजुट हुए हैं।

मैं इस बात को समझता हूं कि लम्बी-लम्बी कष्टदायक यात्रा करके महासम्मेलन में आना कोई सरल कार्य नहीं है, पर एक सच्चे आर्य होने के नाते आपने इसे अपना कर्त्तव्य माना और अनेक कष्ट सहकर, घर के सुखों को भुलाकर आप यहां पधारे हैं। क्योंकि आपके अन्दर भी वो ही ज्वाला धधक रही है जो ऋषिवर देवदयानन्द सरस्वती जी ने प्रज्ज्वलित की थी।

मुझे याद आता है अपना बचपन जब मेरे पूज्य पिताजी मेरी उंगली पकड़कर आर्यसमाज सियालकोट ले जाते थे और फिर मेरी शिक्षा भी आर्यसमाज के विद्यालय में हुई। बचपन से जो दामन आर्य समाज का पकड़ा था, सो अभी तक दिल में आर्य समाज ही बसा हुआ है। ये ऋषिवर देव दयानंद जी के विचारों और परमपिता परमात्मा की कृपा का ही परिणाम है।

हम आर्यों ने उस स्वर्णिम काल को स्वयं अपनी इन आंखों से देखा है, जब जज साहब सिर्फ आर्यसमाजी व्यक्ति की गवाही से ही कोर्ट में फैसले दे दिया करते थे! सोचो, वह क्या युग था, नमस्ते करने वाले पर इतना विश्वास था, जिसकी सीमा नहीं। आज हमें इन सब बातों पर विचार तो करना ही है कि आर्य समाज को हम किस दिशा में लेकर जाएं।

आर्य समाजों के जलसों पर इतनी भीड़ हुआ करती थी कि मानो सारा शहर उमड़कर आ गया हो। आज जमाना बदल रहा है, हमें भी अपने आपको बदलना होगा तभी हम नए जमाने के साथ चल पाएंगे।

मुझे खुशी है यह कहते हुए कि हमने पिछले वर्षों में कई उत्साह जनक कार्य किये हैं जिनसे हम अपने पुराने संगठन को और अधिक मजबूत कर सकेंगे। आप सब जो दुनिया के कोने-कोने से आज यहां पधारे हैं उनके प्रयासों का ही यह परिणाम है।

मेरी उम्र 96 वर्ष की ओर है, इच्छा है कि आर्य समाज का स्वर्णिमकाल पुन: लाने के यज्ञ में मैं अपनी आहुति दूं। मुझे आप सब लोगों ने अवसर दिया ये मेरा सौभाग्य है । मैं आर्य समाज के भविष्य निर्माण के लिए कुछ विशेष कर सकूं, ऐसी शक्ति मैं परमपिता परमात्मा से मांगता हूं।

मैं ये सोचता हूं कि जब ये शरीर ही मेरा नहीं है तो बाकी सब कुछ मेरा कैसे होगा? अत: कुछ विशेष कार्य जो आर्य समाज की नींव को मजबूत कर सकें, वे हमें अभी करने हैं। आप सब लोगों के आशीर्वाद से जो संकल्प लिये हैं, चाहे वो आदिवासी क्षेत्रों में शिक्षा क्रांति अभियान हो, चाहे मीडिया केन्द्र हो, चाहे प्रतिभा विकास केन्द्र हो, परमपिता परमात्मा की कृपा से वे पूरे हों यही प्रभु से कामना है।

आप सब लोग जो इतनी संख्या में इस महासम्मेलन में पधारे हैं-महिलाएं, बच्चे, आर्यवीर-बुजुर्ग, विद्वान-महापुरुष, सभी ये विचारें कि हम आर्यसमाज को कैसे मजबूत करें, आर्य समाज के कार्यों में मेरा क्या

योगदान होना चाहिए? मैं यहां से क्या शिक्षा और संकल्प अपने साथ लेकर के जाऊं । जैसे हमारे पूर्वजों ने इस आर्यसमाज की बगिया को लगाया और बड़ा किया उसी प्रकार मैं इसका और अधिक प्रचार-प्रसार कर सकूं। आपका ये संकल्प ही इस समारोह को सफल बनाने में सक्षम होगा।

मैं पुन: समस्त विश्व से पधारे हमारे आर्यजन तथा भारत के कोने-कोने से पधारे हमारे आर्यजनों का इस महासम्मेलन में पधारने पर हार्दिक स्वागत करता हूं। समस्त विद्वानों का, सन्यासी महानुभावों का, भजनोपदेशकों का, समस्त आर्य प्रतिनिधि सभाओं के अधिकारियों का, कार्यकर्त्ताओं का तथा लम्बे समय से इसके प्रयासों में जुटे दिल्ली की समस्त आर्य समाजों के पदाधिकारियों का बहुत-बहुत स्वागत, अभिनंदन।

प्रथम पृष्ठ का शेष

स्वामी दयानंद ने नमक कानून का विरोध किया था।

वे इस कानून को गरीबों के लिए अहितकर मानते थे। हम सभी जानते हैं इस पुस्तक के प्रकाशित होने के 55 वर्षों के बाद 1930 में डांडी में गांधी जी ने नमक कानून तोड़कर हमारे स्वाधीनता आंदोलन में एक नई ऊर्जा का संचार किया था।

स्वामी दयानंद ने देश के विभिन्न क्षेत्रों में जाकर आर्य समाज के आदर्शों का प्रसार किया। उन्हें अनेक अवसरों पर कड़े विरोध का सामना भी करना पड़ा था। अनेक स्थानों पर उनके विरुद्ध बल प्रयोग तक करने के लिए असामाजिक तत्वों को इकट्ठा किया जाता था। कई स्थानों पर कानूनी दांवपेंच भी लगाए गए। एक बार बनारस में रूढ़िवादियों ने मजिस्ट्रेट के पास जाकर उन्हें राजी कर लिया कि शांति भंग होने की आशंका के आधार पर स्वामी दयानंद के भाषणों पर रोक लगा दी जाए। स्वामी दयानंद को भाषण देने से रोकने के सरकारी आदेश की 'पायनियर और 'थियोसॉफिस्ट' अखबारों ने कड़ी आलोचना की और वह सरकारी आदेश रद्द किया गया। स्वामी जी के भाषण सफलतापूर्वक आयोजित किए गए और वे बहुत लोकप्रिय हुए।

इस प्रकार, अनेक स्थानों पर स्वामी जी को विरोध का सामना करना पड़ा, लेकिन उनकी तर्क-शक्ति और समाज के हर व्यक्ति के कल्याण की उनकी दृष्टि का लोगों पर गहरा असर पड़ा और आर्य समाज की लोकप्रियता और शक्ति बढ़ती गई। यह भी ध्यान देने योग्य बात है कि उन्नीसवीं सदी में ही स्वामी जी ने यह समझाया कि स्त्रियों के अधिकार पुरुषों के ही समान होने चाहिए।

उनकी कार्य-शैली का अंदाजा इस बात से भी लगाया जा सकता है कि आर्य समाज की स्थापना करने के बाद उन्होंने एक साधारण सदस्य के रूप में ही निरंतर कार्य किया और अध्यक्ष पद स्वीकार करने के आग्रहों को नहीं माना। उनकी प्रामाणिकता, सत्य-निष्ठा और आधुनिक सोच के बल पर आर्य समाज के आंदोलन ने ज़ोर पकड़ा और उत्तर भारत में तेजी से एक के बाद एक सैकड़ों आर्य समाज केन्द्रों की स्थापना हो गई।

स्वामी दयानंद सरस्वती का चिंतन और उनका सक्रिय योगदान भारत की परंपरा के प्रति गौरव की भावना पर आधारित है। उन्होंने भारतीय चिंतन की शक्ति को पहचाना और उसे व्यवहार जगत में प्रसारित किया। उनकी इसी विशेषता को व्यक्त करते हुए **गुरुदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर** ने कहा था- "मैं सादर प्रणाम करता हूँ उस महागुरु दयानंद को, जिसकी दिव्यदृष्टि ने भारत की आत्मगाथा में, सत्य गाथा में, सत्य और एकता का बीज देखा।"

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि आर्य समाज के आदर्शों और क्रियाकलापों को आधुनिक युग में प्रासंगिक बनाए रखने के निरंतर प्रयास चलते रहते हैं। मुझे बताया गया है कि इस सम्मेलन में अंध-विश्वास निवारण, आधुनिकीकरण, भविष्य की चुनौतियों और जरूरतों, नारी सशक्तीकरण, आदिवासियों के कल्याण तथा प्राकृतिक आपदाओं के प्रबंधन जैसे विषयों पर विचार-विमर्श किया जाएगा। मुझे आशा है कि सौर ऊर्जा तथा वैकल्पिक ऊर्जा के अन्य स्रोतों के प्रयोग के लिए आर्य समाज भी प्रयास करेगा और इस तरह पर्यावरण संरक्षण को अपना योगदान देगा।

समाज में आधुनिक विचारों को शक्ति प्रदान करना, महिलाओं को समुचित स्थान व शक्ति प्रदान करना, प्रगति का लाभ सभी वर्गों तक पहुंचाना, घरों-गाँवों-शहरों की स्वच्छता सुनिश्चित करना, पर्यावरण और विकास की चुनौतियों का सामना करना ऐसे महत्वपूर्ण मुद्दे हैं जिन पर सरकार के साथ-साथ समाज को भी सक्रिय भूमिका निभानी है। आर्य समाज जैसे संगठन ऐसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर अपना योगदान दे रहे हैं, यह प्रसन्नता की बात है।

यह शरद-कालीन उत्सवों का समय है। इस समय दिल्ली जैसे शहरों के वातावरण में प्रदूषण की वजह से सांस लेने की दिक्कतें बढ़ जाती हैं। बच्चों और बुजुर्गों पर इसका अधिक असर पड़ता है। सामाजिक संस्थाओं को लोगों में यह जागरूकता फैलानी चाहिए कि सभी त्यौहार इस प्रकार मनाएँ जाएँ जिससे पर्यावरण पर कोई प्रतिकूल प्रभाव न पड़े तथा शांति और सौहार्द बना रहे। आर्य समाज जैसे संस्थान इन कार्यों में अग्रणी भूमिका निभा सकते हैं।

आज आर्य समाज की लगभग दस हजार इकाइयां देश-विदेश में मानव कल्याण के कार्यों में संलग्न हैं। नैतिकता पर आधारित आधुनिक शिक्षा तथा समाज के प्रत्येक वर्ग के, विशेषकर महिलाओं और वंचित वर्गों के उत्थान के लिए आर्य समाज ने प्रभावशाली योगदान दिए हैं। आर्य समाज ने देश में अनेक विद्यालयों और महाविद्यालयों की स्थापना की है। मुझे भी आर्य समाज द्वारा कानपुर में स्थापित एक संस्थान में उच्च-शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिला। आर्य समाज से प्रेरित होकर मेरे पूर्वज भी आर्य समाज के आंदोलन में सहभागी रहे हैं। आर्य समाज ने नारी सशक्तीकरण के हित में देश के विभिन्न हिस्सों में कन्या-पाठशालाओं और उच्च-शिक्षण संस्थानों की भी स्थापना

- *जारी पृष्ठ 7 पर*

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन : 25-28 अक्तूबर, 2018 दिल्ली

वरिष्ठ विद्वान आर्य संन्यासी महानुभाव जिनका मिला आशीर्वाद एवं उद्‌बोधन

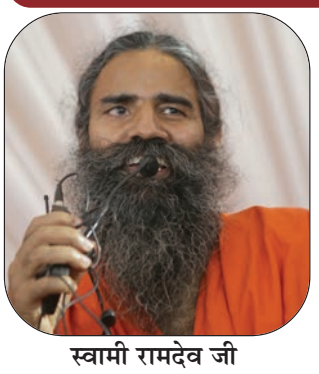
स्वामी रामदेव जी

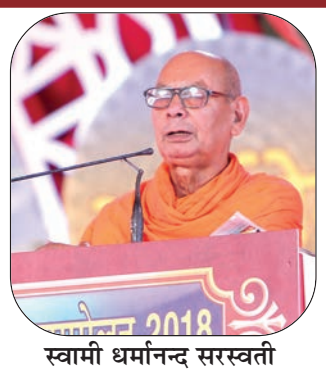
स्वामी धर्मानन्द सरस्वती

डॉ. स्वामी देवव्रत सरस्वती

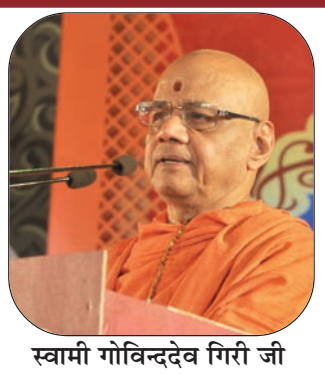
स्वामी गोविन्ददेव गिरी जी

आचार्य बालकृष्ण जी

साध्वी उत्तमायति जी

आचार्य एम. आर. राजेश जी

स्वामी प्रणवानन्द जी

आचार्य विजयपाल जी

स्वामी विवेकानन्द सरस्वती जी

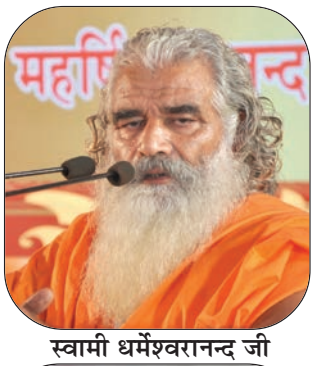
स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी

स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक

स्वामी यज्ञमुनि जी

स्वामी विदेह योगी जी

श्री योगमुनि जी

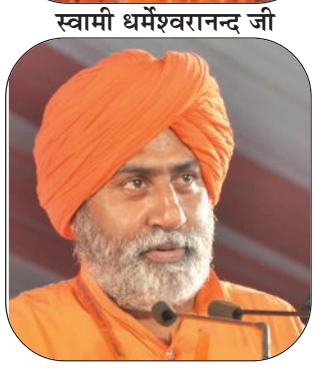
स्वामी सुधानन्द जी

स्वामी सम्पूर्णानन्द सरस्वती जी

स्वामी वेदानन्द सरस्वती जी

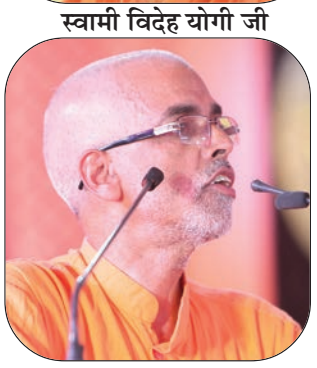
स्वामी अग्निव्रत नैष्ठिक जी

स्वामी ऋतस्पति जी

वैदिक विद्वान एवं भजनोपदेशकों के भजन-प्रवचनों से मिली एक नई दिशा व उत्साह

आचार्य वागीश जी

आचार्य सत्यजित जी

आचार्य सोमदेव जी

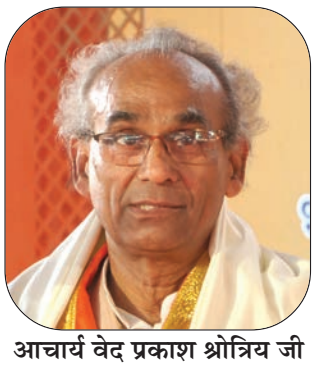
आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय जी

आचार्य आर्य नरेश जी

पं. सत्यपाल पथिक जी

डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार जी

डॉ. महावीर अग्रवाल जी

आचार्य सनत् कुमार जी

डॉ. महेश विद्यालंकार जी

विशेष नोट : उपरोक्त प्रकाशित चित्र अन्तिम नहीं हैं। महासम्मेलन में अपना आशीर्वाद, उद्‌बोधन, मार्गदर्शन, भक्ति संगीत प्रस्तुत करने वाले आर्य संन्यासियों, वैदिक विद्वानों, भजनोपदेशकों, अतिथियों, व्यवस्थापकों, संयोजकों, कार्यकर्ताओं के चित्र आर्यसन्देश के आगामी अंकों में भी प्रकाशित किए जाएंगे। - सम्पादक

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन : 25-28 अक्तूबर, 2018 दिल्ली

महासम्मेलन सफल बनाने में हमारे मार्गदर्शक, प्रेरक एवं विशिष्ट सहयोगी महानुभाव

महाशय धर्मपाल जी
स्वागताध्यक्ष

आचार्य देवव्रत जी
माननीय राज्यपाल हि.प्र.

श्री गंगा प्रसाद जी
माननीय राज्यपाल सिक्किम

डॉ. सत्यपाल सिंह जी
माननीय, राज्यमन्त्री

स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती
संसद सदस्य (लोक सभा)

डॉ. अशोक कुमार चौहान जी
संस्थापक अध्यक्ष, एमिटी

श्री सुरेन्द्र आर्य जी
चेयमरमैन, जे.बी.एम. ग्रुप

माता सन्तोष मुंजाल जी
हीरो मोटो परिवार

महाशय राजीव गुलाटी जी
निदेशक, एम.डी.एच.

श्री ओम प्रकाश गोयल जी
समाजसेवा, पानीपत

भारतीय प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं के माननीय अधिकारी जिनका मिला अथक सहयोग

मा. रामपाल जी
प्रधान, आ.प्र.स. हरियाणा

श्री मिठाई लाल सिंह जी
प्रधान, आ. प्र.स. मुम्बई

श्री सुदर्शन शर्मा जी
प्रधान, आ. प्र.स. पंजाब

श्री संजीव चौरसिया जी
प्रधान, आ.प्र.स. बिहार

श्री दीनदयाल गुप्त जी
प्रधान, आ. प्र. स. बंगाल

डॉ. विनय विद्यालंकार जी
प्रधान, आ.प्र.स. उत्तराखंण्ड

श्री प्रबोधचन्द्र सूद जी
प्रधान, आ.प्र.स. हिमाचल

आचार्य सत्यवीर शास्त्री
प्रधान, आ.प्र.स.म.प्र.-विदर्भ

श्री राकेश चौहान जी
प्रधान, आ. प्र. स. जम्मू.कश्मीर

श्री सुभाष अष्टिकर जी
प्रधान, आ.प्र.स. कनार्टक

आचार्य अंशुदेव जी
प्रधान, आ.प्र.स. छत्तीसगढ़

श्री इन्द्रप्रकाश गांधी जी
प्रधान, म.भारतीय आ.प्र.स.

श्री प्रम भारद्वाज जी
मन्त्री, आ.प्र. स. पंजाब

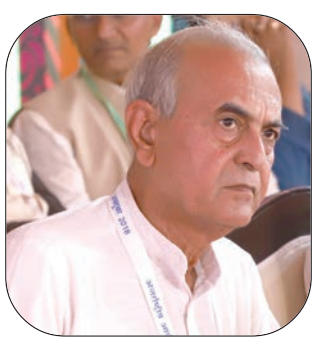
श्री हंसमुखभाई परमार जी
मन्त्री, आ. प्र. स. गुजरात

डॉ. धर्मतेजा जी
संयोजक, आ.प्र. एवं तेलंगाना

विशेष नोट : उपरोक्त प्रकाशित चित्र अन्तिम नहीं हैं। महासम्मेलन में अपना आशीर्वाद, उद्‌बोधन, मार्गदर्शन, भक्ति संगीत प्रस्तुत करने वाले आर्य संन्यासियों, वैदिक विद्वानों, भजनोपदेशकों, अतिथियों, व्यवस्थापकों, संयोजकों, कार्यकर्ताओं के चित्र आर्यसन्देश के आगामी अंकों में भी प्रकाशित किए जाएंगे। - सम्पादक

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन
25-28 अक्तूबर, 2018 दिल्ली

सम्पूर्ण संगठन राष्ट्रसेवा के लिए सदैव तत्पर

महासम्मेलन के अध्यक्ष श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी का आह्वान

सार्व. आ. प्र. सभा के संरक्षक तथा इस सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष आदरणीय महाशय धर्मपाल जी, मंच पर उपस्थित **समस्त संन्यासीवृन्द, सम्मानीय विद्वतजन,** समस्त प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं के प्रधान एवं मन्त्रीगण, एवं विदेशों में आर्यसमाज का नेतृत्व करने वाले सभी पदाधिकारीगण एवं प्रतिनिधिगण, उपस्थित अतिथिगण, वन्दनीया मातृशक्ति एवं आर्यभद्र पुरुषो!

भारतभूमि की ऐतिहासिक नगरी दिल्ली में आयोजित आर्यों के इस अंतर्राष्ट्रीय महासम्मेलन के आयोजन के अवसर पर विश्व के अनेक देशों से तथा भारत के कोने-कोने से पधारे बहनों-भाइयों एवम् आर्य समाज के समस्त अनुयायियों का मैं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से आत्मीय अभिनंदन करता हूं-स्वागत करता हूं।

परमपिता परमात्मा की असीम कृपा से 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' के शुभ संकल्प को लेकर आरंभ होने जा रहे इस विशाल व भव्य अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की सफलता की मैं कामना करता हूं।

बन्धुओ, विश्व में फैले घोर अन्धकार के युग में वेदों के प्रकाण्ड ज्ञाता महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने **मानव मात्र के कल्याणार्थ** सम्प्रदाय और मजहब से रहित ईश्वरीय ज्ञान को घर-घर तक पहुंचाने तथा कुरीतियों व अंधविश्वासों से हटकर समस्त मानव जाति को उन्नति के मार्ग पर चलने की प्रेरणा हेतु आर्य समाज की स्थापना की। सामाजिक हित में आर्यसमाज ने आरंभ से ही अपनी जिम्मेदारियों के निर्वाह का जो क्रम प्रारंभ किया था वह अपने आप में इतिहास की स्वर्णिम उपलब्धि है। बम्बई में आर्य समाज की स्थापना के बाद कैसे यह सारे भारत एवं अन्य कई देशों में फैल गया, यह अपने आपमें एक बड़ी बात है। स्थापना के पश्चात् आर्य समाज ने हर क्षेत्र में अपनी अमिट छाप छोड़ी। चाहे वह पाखण्ड, अंधविश्वास, छुआछूत या स्त्री शिक्षा का क्षेत्र हो, चाहे देश की आजादी के आन्दोलन के नेतृत्व की बात हो, चाहे वेदों के पुनरुद्धार या राष्ट्र रक्षा की बात हो, आर्य समाज सबसे आगे रहा। समाज व संस्कृति की रक्षार्थ, धर्मान्तरण को रोकने की और व्याप्त कुरीतियों के विरुद्ध भी आर्य समाज ने गहरी चोट की। आर्यसमाज एक जन आन्दोलन की तरह आगे बढ़ता चला गया।

1947 में भारत को आजादी मिली। आजादी में आर्यसमाज का सर्वाधिक योगदान होते हुए भी आर्यसमाज ने उसकी कीमत नहीं चाही बल्कि राजनीति में सक्रिय न रहकर उसने सामाजिक सुधार के कार्यो को व सनातन संस्कृति की रक्षा को विशेष महत्त्व दिया और इसी पथ पर आगे बढ़ता गया। **उसी का कारण यह रहा कि** आर्यसमाज के व्यापक प्रभाव के चलते देश के अनेक क्षेत्रों तथा कार्यो में आर्यसमाज का प्रभुत्व बढ़ता गया। हमारे पूर्वजों ने, हमारे नेताओं ने, हमारे प्रचारकों ने तथा जीवनदानी महानुभावों ने, घोर पुरुषार्थ कर इसे नई ऊंचाईयां प्रदान कीं। इस अभियान में अनेकों संन्यासीवृन्द तथा ज्ञानी और दानशील महानुभावों की एक लम्बी श्रृंखला है जिनके अथक प्रयास से आर्य समाज की संस्थाओं को विश्वव्यापी **वृहद** आधार प्राप्त हुआ। दस हजार से अधिक शाखाएं आज पूरे विश्व में फैली हुई हैं।

इतिहास को गहराई देखने पर पता चलता है कि इन सबकी प्रेरणा के पीछे महर्षि के महान त्याग व बलिदान के साथ-साथ उनके अनगिनत अनुयायियों ने भी अनोखे त्याग, तप, समर्पण, संघर्ष और उत्साह के साथ आर्यसमाज का काम किया है, जो आज हमारी प्रेरणा का पुंज है।

आज आर्यसमाज को स्थापित हुए 143 साल पूरे होने जा रहे हैं। यह समय कम नहीं है- पर बहुत ज्यादा भी नहीं है। वैदिक सभ्यता के पतन का आरंभ जो महाभारत काल से हुआ था, उसको आज लगभग 5000 साल होने जा रहे हैं। इसके पूर्व समाज व विश्व की सुख शान्ति का मुख्य सूत्र केवल वैदिक संस्कृति ही थी। आज पुनः उसी गौरव को प्राप्त करना हमारा लक्ष्य है। यद्यपि उसके लिए समय भी पर्याप्त लगेगा, किंतु उसके लिए हमें निरन्तरता से उसी त्याग, उसी क्षमता, उसी इच्छा शक्ति, उसी कर्त्तव्यपराणता, उसी प्रेरणा व लगनशीलता के साथ पुरुषार्थ करना होगा जैसा हमारे पूर्वजों ने किया। इतिहास जहां हमें यह प्रेरणा देता है कि हम अपने स्वर्णिम इतिहास को न भूलें वहीं अतीत की गलतियों को फिर न दोहरायें ऐसी नसीहत भी देता है।

इन्हीं बातों को ध्यान में रखकर हमने आर्य समाज के भविष्य की योजना बनाई है। उसमें हमें सफलता भी मिली है। प्रचार-प्रसार की दृष्टि से भारत के विभिन्न क्षेत्रों में आर्य समाज का सुन्दर कार्य हो रहा है। भारत के बाहर विदेशों में जहां-जहां आर्य समाजें हैं वहां-वहां सम्पर्क करके संगठन को मजबूत कर उत्साह पैदा करना और उनकी मूल जरूरतों को पूरा करने का प्रयास किया जा रहा है। शिक्षा क्रान्ति अभियान जो विशेषकर आदिवासी क्षेत्रों में सम्पादित हो रहा है, उसे और आगे बढ़ाना तथा यज्ञ के वैज्ञानिक शोध के लिए विशेष प्रकल्प बनाने की योजना भी शीघ्र ही प्रारंभ होने जा रही है। वैदिक साहित्य के क्षेत्र में प्रकाशन और वितरण की ओर विशेष कदम बढ़ाकर, आर्य जगत के नए प्रकल्प तैयार करके बालकों के चरित्र निर्माण हेतु रविवारीय कक्षा एवम् इस हेतु पाठ्यक्रम बनाया जा रहा है। ऐसे अन्य कई प्रकल्पों और कार्यो को आरंभ करने का प्रयास अपनी योग्यता, क्षमता व सीमा के आधार पर किया जा रहा है। आप चारों दिन के इस सम्मेलन में इन सबके बारे में विस्तार से जानेंगे।

पंचकुला में एक विशाल भूखंड पर एक विश्वस्तरीय वैदिक शोध एवं प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना की जा रही है जहां से विश्व स्तर के उपदेशक, भजनोपदेशक, संगीतज्ञ, प्रचारक तथा आर्यवीर तैयार होकर निकलेंगे। इस केन्द्र में सभी देशों के कार्यालय भी होंगे। वेद-विज्ञान के सभी शोध कार्य भी यहां प्रारम्भ होंगे।

हमारा ये मानना है कि आने वाला भविष्य अनेक समस्याओं से घिरा होगा। समाज के तौर तरीके बदल रहे हैं, परिवारों का स्वरूप बदल रहा है, विश्व का स्वरूप बदल रहा है। वर्त्तमान में मौजूद चुनौतियां व आगे आने वाली चुनौतियों के लिए हम आर्यों को, अपने आपको पूरी तरह से तैयार करना है, इसका चिन्तन भी इस महासम्मेलन में मुख्य रूप से होगा।

आर्यसमाज की विचारधारा वेद की शाश्वत विचारधारा है, जो सदा के लिए और सबके लिए जीवन जीने का एक संविधान है। यह विचारधारा स्थाई है, यह परिवर्तनशील व कमजोर पड़ने वाली नहीं है। अतः परमपिता परमात्मा के आशीर्वाद से महर्षि दयानन्द सरस्वती को आर्यसमाज का प्रथम सेनापति मानते हुए उनके आदर्श पर चलते हुए हमने गत 143 वर्षो में महान उपलब्धियां हासिल की हैं। अब आगे के लक्ष्य को पाने की तैयारी हम सबको मिलकर करनी है। 2024 में महर्षि दयानन्द जी के जन्म को 200 वर्ष होने जा रहे हैं। इन आगामी छः वर्षो में महर्षि की जीवनी व उसकी महानता से जन-जन को परिचित करवाने का दृढ़ संकल्प हमें इसी सम्मेलन से लेकर जाना है और उसे पूरा करना है। उसके ठीक एक वर्ष पश्चात् 2025 में आर्यसमाज की स्थापना के भी 150 वर्ष पूर्ण होंगे। ये सब हमारे लिए गौरव के क्षण होंगे किंतु उसके साथ-साथ हमें यह भी विचारना होगा कि इन 150 वर्षो में हम कहां पहुंचे, लक्ष्य के कितने निकट पहुंचे और कितने दूर। अब पुनः पहले से अधिक सक्रिय होकर इन दोनों अवसरों पर हमें समस्त संसार को एक नई चेतना और नई दिशा का संदेश देना है।

हम आज सार्वदेशिक सभा की ओर से उन सभी महानपुरुषों का तथा बलिदानियों का स्मरण करते हैं जिन्होंने आर्यसमाज को अपने तप व बलिदान से सींचा है। हम आज उन सब संन्यासियों, विद्वान महानुभावों व सार्वदेशिक सभा के सभी पूर्व अधिकारियों को भी स्मरण करते हैं जिन्होंने अपने अद्भुत त्याग व कर्मठता से इस संगठन को आगे बढ़ाया। आज हमें वे सभी कार्यकर्त्ता स्मरण आते हैं, जिन्होंने अपने परिवार को और अपनी सुख सुविधाओं को पीछे रखते हुए आर्यसमाज के कार्यो के लिए सारा जीवन समर्पित कर दिया।

भारत के सम्मानीय राष्ट्रपति महोदय श्री रामनाथ जी कोविन्द ने आज अपने करकमलों से इस ऐतिहासिक अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन का उद्घाटन करके पूरे आर्यजगत को गौरवान्वित किया है।

इस महासम्मेलन के उद्घाटन के अवसर पर इस कार्य में लगे सभी आर्यजनों का विशेषकर दिल्ली की समस्त आर्य समाजों की महिलाओं तथा पुरुष आर्यजनों का, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान भाई धर्मपाल आर्य जी का एवं समस्त सहयोगी टीम का एवं सभी आर्य संगठनों का लम्बे समय से किये गए परिश्रम के प्रति आभार व्यक्त करता हूं।

मैं इस अवसर पर भारत की समस्त आर्य प्रतिनिधि सभाओं के पदाधिकारियों का तथा प्रतिनिधियों का, तथा समस्त आर्यभद्र पुरुषों एवं मातृशक्ति का हृदय से आभारी हूं, जिन्होंने भारी संख्या में पधारकर इस सम्मेलन में एक नई ऊर्जा और उत्साह का संचार किया है।

मैं विदेशों से पधारे हुए सभी आर्यजनों को भारत की समस्त आर्यसमाजों की ओर से हार्दिक बधाई देता हूं और आभार व्यक्त करता हूं। आप सबके आगमन से इस सम्मेलन का अन्तर्राष्ट्रीय मंच जीवन्त हो उठा है। आपकी उपस्थिति से सभी अत्यन्त उत्साहित एवं आनन्दित हैं।

मैं उन सभी विशिष्ट अतिथियों के प्रति भी हृदय से आभार प्रदर्शित करता हूं जिनकी गरिमामयी उपस्थिति से यह महा सम्मेलन एक अविस्मरणीय स्वरूप धारण करने जा रहा है।

अपने वक्तव्य के अन्त में, मैं अपनी ओर से और आप सबकी ओर से एक ऐसी महान विभूति के प्रति अपना आभार व्यक्त करना चाहता हूं, जो 95 वर्ष की आयु में भी हमारी प्रेरणा के अदम्य स्रोत बने हुए हैं। आर्यजगत के ऐसे भामाशाह श्रद्धेय महाशय धर्मपाल जी ने मुक्त हस्त से इस सम्मेलन की सफलता के लिये अपना आशीर्वाद प्रदान किया है। हम उन्हें शत्-शत् नमन करते हैं और परमात्मा से उनके मंगलमय स्वस्थ जीवन की कामना करते हैं।

बन्धुओ, यह सम्मेलन हम सबका है। अच्छी से अच्छी व्यवस्थाएं आप सबको उपलब्ध कराने के अथक प्रयासों के बावजूद भी कुछ असुविधाएं हो सकती हैं। आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि आप आर्य समाज के सच्चे मिशनरी के रूप में तथा एक शुभचिन्तक के रूप में उन असुविधाओं को नज़रअंदाज करते हुए इस अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन को ऐतिहासिक सफलता प्रदान करने में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे।

आप सभी को पुनः धन्यवाद।

प्रथम पृष्ठ का शेष

श्री धर्मपाल आर्य पुनः सर्वसम्मति से प्रधान निर्वाचित

कार्यक्रम का शुभारम्भ गायत्री मंत्र व ईश्वर स्तुति प्रार्थनोपासना मंत्रों से हुआ। तत्पश्चात् प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने अधिवेशन में पधारे सभी प्रतिनिधियों एवं मुख्य अतिथि मा. राम पाल जी प्रधान प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा का स्वागत किया। कार्यक्रम को गति प्रदान करते हुए प्रधान जी द्वारा विगत वर्षों में दिवंगत हुई महानआत्माओं की शान्ति हेतु प्रार्थना की व दो मिनट का मौन रखा गया। दिवंगत आत्माओं में प्रमुख ब्र. राज सिंह आर्य, श्री राजीव आर्य, आचार्य बलदेव जी, आ. धर्मवीर जी, श्री बृजमोहन मुंजाल जी का संक्षिप्त परिचय देते हुए इनके दिवंगत होने से आर्य समाज की क्षति बताया। तत्पश्चात् गत साधारण सभा बैठक दिनांक 29 नवम्बर 2014 की कार्यवाही की सम्पुष्टि सर्वसम्मति से की गई।

महामंत्री श्री विनय आर्य द्वारा सभा के समस्त कर्मचारियों का परिचय कराया गया व सभा में उपलब्ध सुविधाओं की जानकारी दी गई। सभा के पदाधिकारियों के कार्यों के वारे में सक्षिप्त जानकारी दी गई। सभा के बिक्री विभाग, वेद प्रचार विभाग की जानकारी दी तथा आर्य सन्देश को निरन्तर प्राप्त हो रहे सहयोग के लिए एम.डी.एच. ग्रुप चेयरमैन महाशय धर्मपाल जी एवं आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी को साधुवाद दिया।

कोषाध्यक्ष श्री विद्यामित्र ठुकराल जी ने वर्ष 2014-2017 का आय-व्यय विवरण प्रस्तुत किया जिसकी सभी उपस्थित महानुभावों द्वारा सम्पुष्टि की गई। सभा द्वारा किये गये कार्यों का विवरण देते हुए श्री विनय आर्य ने जानकारी देते हुए कहा कि सम्भवतः - आगामी वर्षों में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का नाम गुरुकुल कांगड़ी सम-विश्वविद्यालय हो सकता है।

⋆ गुरु विरजानन्द संस्कृत कुलम के नए भवन का उद्घाटन जनवरी 2019 में होना सम्भव है।

⋆ 20 दिसम्बर 2018 को पुनः एक बड़ी बैठक की जाएगी जिसमें सभा के विभिन्न प्रकल्पों पर किये जा रहे कार्यों को सबके समक्ष प्रदर्शित किया जाएगा।

⋆ सभा कार्यालय 15 हनुमान रोड के ऊपरी हिस्से में आर्य समाज के मीडिया सेन्टर की स्थापना की गई है जहां से पूरे विश्व में आर्य समाज की गतिविधियों का प्रसारण किया जाएगा।

⋆ आर्य प्रतिनिधि सभा को वर्तमान में व पूर्व से ही तीन बड़ी हस्तियों महाशय धर्मपाल जी एम. डी. एच. ग्रुप, श्री सुरेन्द्र आर्य जी चेयरमैन, जे.बी.एम. ग्रुप, डॉ. अशोक कुमार चौहान जी चेयरमैन, एमिटी, माता सन्तोष मुंजाल जी, हीरो परिवार का सहयोग मिल रहा है साथ ही अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-2018 में अथक परिश्रम व सहयोग के लिए सार्वदेशिक सभा प्रधान श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल जी व मंत्री श्री प्रकाश आर्य जी का धन्यवाद किया।

प्रस्ताव पारित

⋆ सभा के संविधान में संशोधन के लिए समिति गठन की स्वीकृति प्राप्त हो चुकी है।

⋆ अंधविश्वास के खिलाफ भारत सरकार से मांग करने का निर्णय।

⋆ अगले 5 वर्षों में बिना भवन की कोई आर्य समाज नहीं रहेगी।

⋆ वर्ष में एक बार 4 दिवसीय यज्ञ का आयोजन।

प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने सभी उपस्थित महानुभावों का धन्यवाद करते हुए आर्य महासम्मेलन-2018 की सफलता के लिए सभी कार्यकत्ताओं, पदाधिकारियों, समस्त समितियों के संयोजकों का धन्यवाद करते हुए कहा कि अगर मैं इन सब कार्यों का श्रेय देना चाहूं तो सिर्फ इतना कहूंगा कि-

फूल तो इतने खिले हैं उपवन में,
पर इन्हें तरतीब से माला बनाया किसने।

श्री धर्मपाल आर्य जी द्वारा चुनावी प्रक्रिया के लिए निर्वाचन अधिकारी मा. रामपाल जी, पर्यवेक्षक श्री सत्यानन्द जी आर्य का परिचय कराया तथा इस हेतु उक्त दोनों अधिकारियों को कार्यवाही सौंपते हुए सभा पदाधिकारियों व कर्मचारियों का आभार व्यक्त किया और वर्तमान अन्तरंग व कार्यकारिणी सभा को भंग करने की घोषणा की तथा आगामी कार्यवाही के लिए मा. रामपाल जी से अध्यक्षता करने का निवेदन किया।

मा. रामपाल जी ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की रीढ़ की हड्डी धर्मपाल आर्य जी रहे तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। बाहर से आने वाले प्रतिनिधि बहुत सुन्दर संदेश लेकर भारत से विदा हुए। पर्यवेक्षक श्री सत्यानन्द आर्य जी ने अपने विचार रखते हुए कहा कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने सदैव अपने कर्त्तव्यों का निर्वाह किया है और आर्यसमाज के ऊपर अन्दर या बाहर से आने वाली किसी भी समस्या का डटकर मुकाबला किया है। मैं

- शेष पृष्ठ 8 पर

आओ ! संस्कृत सीखें

संस्कृत वाक्य अभ्यासः (71)

''चाहिए'' अर्थक यत् प्रत्यय

गतांक से आगे....

(अचो यत्) चाहिए या योग्य अर्थों में आ,इ, ई,उ,ऊ अन्त वाली धातुओं से यत् प्रत्यय होता है। यत् का य शेष रहता है। यह प्रत्यय कर्मवाच्य व भाववाच्य में होता है।

उदाहरण- शिशुना जलं पेयम्। यहां पा धातु से 'चाहिए' या 'योग्य' अर्थ का बोधक यत् प्रत्यय हुआ है अतः वाक्य का अर्थ हुआ 'शिशु के द्वारा जल पीना योग्य है।'

2) भवद्भिः पुस्तकानि देयानि। आप सब के द्वारा पुस्तकें दी जानी योग्य हैं।
3) अतिथिना शुचि वारि पेयम्। अतिथि के द्वारा स्वच्छ जल पीना योग्य है।
4) जनैः महापुरुषाणां कीर्तिः गेया। लोगों के द्वारा महापुरुषों की कीर्ति गाई जानी योग्य है।
5) तया अत्र स्थेयम्। उस(स्त्री) के द्वारा यहां रहा जाना योग्य है।
6) बालिकया पुष्पाणि चेयानि। बालिका के द्वारा फूल चुनने योग्य हैं।
7) सेनापतिना शत्रुः जेयः। सेनापति के द्वारा शत्रु जीता जाना चाहिए।
8) शिक्षकेण शिक्षा देया। शिक्षक के द्वारा शिक्षा दी जानी चाहिए ।
9) दुर्जनेन पापानि हेयानि। दुर्जन के द्वारा पाप छोड़े जाने चाहिए।
10) पण्डितेन यज्ञकुण्डे हव्यम्। पण्डित के द्वारा यज्ञकुण्ड में आहुति दी जानी चाहिए।

- *क्रमशः*

आचार्य सन्दीप कुमार उपाध्याय, मो. 9899875130

पृष्ठ 3 का शेष

की है। इसी प्रकार आदिवासी क्षेत्रों में शिक्षा के प्रसार के लिए 'अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ' द्वारा स्कूल तथा कौशल विकास केंद्र चलाए जा रहे हैं जहां बच्चों को निशुल्क आवासीय शिक्षा प्रदान की जाती है। इस सेवाश्रम संघ द्वारा अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जन जातियों के उत्थान के लिए, उन्हें शिक्षा के माध्यम से, समाज की मुख्य धारा से जोड़ा जा रहा है।

सन् 2024 में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जन्म-जयंती है। सन् 2025 में आर्य समाज की स्थापना की एक सौ पचासवीं वर्षगांठ होगी। आधुनिक परिवेश में स्वामी दयानंद के दिखाए मार्ग पर चलना और भी अधिक प्रासंगिक हो गया है। स्वामी जी समाज को मत-पंथ-संप्रदाय और जाति-पांति से मुक्त करते हुए मानव मात्र को 'आर्य' अर्थात् 'श्रेष्ठ' बनाने के लिए आजीवन सक्रिय रहे और सबको प्रेरित करते रहे। इस कार्य को उसकी पूर्णता तक आगे ले जाना हम सभी का कर्त्तव्य है। स्वामी जी शांति-पाठ का महत्व समझाते थे। सभी जानते हैं, उस शांति-पाठ में यह प्रार्थना की जाती है कि सम्पूर्ण विश्व में, जल में, धरती में, आकाश में, अन्तरिक्ष में, औषधियों में, वनस्पतियों में शांति बनी रहे। शांति-पाठ में निहित यह कामना पर्यावरण संतुलन का आदर्श रूप है। आज 'क्लाइमेट चेंज' और 'ग्लोबल वार्मिंग' की चुनौतियों के सम्मुख इसी आदर्श को प्राप्त करने के लिए आर्य समाज जैसी संस्थाओं को निरंतर प्रयास करना है।

इस प्रकार, पर्यावरण के प्रति सजग और मानव-कल्याण के प्रति संवेदनशील तथा असमानता और अंध-विश्वास से मुक्त समाज की ओर बढ़ते हुए, आर्य समाज के सभी सदस्य, स्वामी दयानंद सरस्वती के आदर्शों के प्रति अपनी आस्था को साकार रूप प्रदान करेंगे। इस विश्वास के साथ, मैं 'अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन' के सभी प्रतिभागियों के तथा पूरे समाज के उज्ज्वल भविष्य की मंगल-कामना करता हूँ।

धन्यवाद- जय हिन्द!

शोक समाचार

श्री दर्शन अग्निहोत्री जी को पत्नी शोक

आर्य समाज प्रीत विहार के कर्मठ कार्यकर्ता एवं वरिष्ठ उद्योगपति, डिलाईट फर्नीचर्स के चेयरमैन श्री दर्शन अग्निहोत्री जी की धर्मपत्नी श्रीमती सरोज अग्निहोत्री जी का 24 नवम्बर 2018 को लगभग 70 वर्ष की अवस्था में निधन हो गया। श्रीमती सरोज अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ 25 नवम्बर को निगम बोध घाट पर किया गया, जहां अनेक आर्यसमाजों के पदाधिकारियों ने पहुंचकर उन्हें अन्तिम विदाई दी। उनकी स्मृति में शन्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 27 नवम्बर को आर्यसमाज हनुमान रोड नई दिल्ली के सभागार में सम्पन्न हुई जिसमें सभा अधिकारियों के साथ-साथ उनके निजी परिवार एवं दिल्ली व आस-पास की अनेक आर्य संस्थाओं के पदाधिकारियों ने पहुंचकर श्रद्धासुमन अर्पित किए। ज्ञात हो श्री दर्शन अग्निहोत्री जी के घर में सदैव यज्ञ की अग्नि प्रज्ज्वलित होती रहती है इसी कारण आप आग्निहोत्र के नाम से विख्यात हैं।

श्री हंसराज वर्मा जी दिवंगत

आर्य समाज गोविंदपुरी के संस्थापक सदस्य एवं सरंक्षक श्री हंसराज वर्मा जी का 93 वर्ष की आयु में 15 नवम्बर को निधन हो गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजली सभा दिनांक 25.11.2018 दिन रविवार को आर्य समाज ग्रेटर कैलाश पार्ट -1 में सम्पन्न हुई।

श्री इन्द्रजीत मदान जी दिवंगत

आर्य समाज पश्चिम विहार के कर्मठ कार्यकर्त्ता एवं प्रसार भारती के पूर्व डिप्टी डायरेक्टर श्री इन्द्रजीत मदान जी का 83 वर्ष की अवस्था में दिनांक 19 नवम्बर 2018 को निधन हो गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 22 नवम्बर 18 को सम्पन्न हुई।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 26 नवम्बर, 2018 से रविवार 2 दिसम्बर, 2018

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 29-30 नवम्बर, 2018

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 28 नवम्बर, 2018

पृष्ठ 7 का शेष

आप सब से इस सौहार्दपूर्ण वातावरण में निर्वाचन प्रक्रिया को शान्तिपूर्वक सम्पन्न करने में सहयोग की अपेक्षा करता हूं।

मा. रामपाल जी ने निर्वाचन की प्रक्रिया आरम्भ करते हुए जैसे ही बोलने का प्रयास किया तभी सारा हॉल एक स्वर में धर्मपाल धर्मपाल, धर्मपाल के सम्बोधन से गूंज उठा। मा. रामपाल जी ने कहा कि आप अपनी ऊर्जा एवं शक्ति को बनाए और बचाए रखें तथा मुझे प्रक्रिया आरम्भ करने दें। तदुपरान्त निर्वाचन अधिकारी मा. रामपाल जी ने प्रधान पद के लिए नाम प्रस्तुत करने का अनुरोध किया। इस पर श्री शिव कुमार मदान, ओम प्रकाश आर्य, अरुण प्रकाश वर्मा, शिवशंकर गुप्ता तथा अन्य अनेक महानुभावों ने एक स्वर में श्री धर्मपाल आर्य को प्रधान बनाने का प्रस्ताव रखा जिसका अनुमोदन श्री जोगेन्द्र खट्टर, राजेन्द्र दुर्गा, सुखबीर सिंह आर्य, महेन्द्र सिंह लोहचब तथा अन्य अनेक महानुभावों ने किया।

निर्वाचन अधिकारी मा. रामपाल जी द्वारा प्रधान पद के लिए अन्य कोई और नाम प्रस्तुत करने के लिए उपस्थित प्रतिनिधियों से निवेदन किया। किन्तु कोई अन्य नाम प्रस्तुत न होने के कारण चुनाव अधिकारी मा. रामपाल जी ने श्री धर्मपाल आर्य जी को पुन: सर्वसम्मति से आगमी तीन वर्षों के लिए प्रधान पद पर निर्वाचित घोषित किया।

प्रतिनिधियों ने सभा की कार्यकारिणी, अन्तरंग सभा एवं अन्य समितियों के सदस्यों को चुनने का अधिकार भी प्रधान जी को सौंपने का प्रस्ताव रखा जिसे सर्वसम्मति से पारित किया गया। निर्वाचन अधिकारी जी द्वारा स्वीकृति प्राप्त होने पर पुन: निर्वाचित प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने अन्तरंग की सूची प्रस्तुत की जिसे निर्वाचन अधिकारी ने निर्वाचित घोषित किया।

चुनाव प्रक्रिया के अन्त में चुनाव अधिकारी मा. रामपाल जी ने कहा कि- अधिवेशन में सभी आर्य प्रतिनिधि एक क्रान्तिकारी संस्था से सम्बद्ध रखते है। अत: आप सभी मापदण्डों को ध्यान में रखते हुए समाज सुधार एवं वैदिक धर्म प्रचार के कार्यों को गति दें और महर्षि के मिशन को आगे बढ़ाए। उन्होंने शान्ति और सौहार्दपूर्ण वातावरण में पदाधिकारियों को चुनने पर आर्य प्रतिनिधियों के प्रति आभार प्रकट किया।

अन्त में नव निर्वाचित प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी एवं महामन्त्री श्री विनय आर्य जी ने उपस्थित सभी प्रतिनिधियों के प्रति आभार प्रकट करते हुए कहा कि आपने हमें जो महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपी है हम उसे पूर्ण करने के लिए वचनबद्ध हैं। शान्ति पाठ एवं जयघोष के साथ निर्वाचन कार्यवाही सम्पन्न हुई। इस अवसर पर आर्य समाज हनुमान रोड नई दिल्ली की ओर से समस्त आगन्तुकों के लिए प्रीतिभोज की व्यवस्था हेतु आर्य समाज के समस्त अधिकारियों का धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

प्रतिष्ठा में,

साधारण अधिवेशन की अध्यक्षता करते सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी। साथ में हैं कोषाध्यक्ष श्री विद्यामित्र ठुकराल जी, उप प्रधान श्री ओम प्रकाश आर्य जी एवं श्री शिव कुमार मदान जी। निर्वाचन प्रक्रिया आरम्भ कराते मा. निर्वाचन अधिकारी मा. रामपाल जी एवं चुनाव पर्यवेक्षक श्री सत्यान्द आर्य जी। सर्वसम्मति से पुन: प्रधान चुने जाने पर श्री धर्मपाल आर्य जी को गायत्री मन्त्र भेंट करके शुभकामनाएं देते दिल्ली सभा के समस्त कार्यकर्ता।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह